File No- 8174

राजनीतिक सहभागिता में जनसंचार माध्यमों की भूमिका : जनपद गाजियाबाद के ग्रामीण क्षेत्र का एक अध्ययन

Ph. D.
ABSTRACT

शोध निर्देशक
डॉ० विकास चन्द्र वशिष्ठ
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

शोधार्थी
विजय कुमार
एम.ए., एम.फिल्, (यूजीसी-नेट)
राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

-: शोध केन्द्र :-

राजनीति विज्ञान विभाग

मेरठ कॉलिज, मेरठ

(सम्बद्ध : चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय परिसर, मेरठ)

2019

"राजनीतिक सहभागिता में जनसंचार माध्यमों की भूमिकाः जनपद गाजियाबाद के ग्रामीण क्षेत्र का एक अध्ययन"

प्रशासनिक दृष्टि से हमारें देश की सबसे छोटी इकाई गाँव है तथा गाँवों पर ही भारत की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संरचना टिकी हुई है। ग्रामीण परिवेश की संस्कृति, व्यवहार, आवश्यकताएँ, मूल्य, संचार माध्यमों की उपलब्धता आदि नगरीय परिवेश से भिन्न होते हैं। इसलिए प्रस्तुत शोध में ग्रामीण समाज में जनसंचार माध्यमों के प्रसार व प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया। लोकतन्त्र की सूचारूता के लिए जितनी आवश्यकता जनसंचार माध्यमों की होती है उतनी ही महत्ता राजनीतिक सहभागिता की भी होती है क्योंकि लोकतन्त्र का सबसे प्रमुख गुण ही शासन के कार्यों में जनता की ज्यादा से ज्यादा राजनीतिक सहभागिता को माना जाता है। जिस प्रकार लोकतन्त्र के लिए राजनीतिक सहभागिता को आवश्यक माना जाता है उसी प्रकार सक्रिय राजनीतिक सहभागिता के लिए स्वतन्त्र जनसंचार माध्यमों का होना भी आवश्यक है।

शोध में यह जानने का प्रयास भी किया गया है कि जनसंचार माध्यम ग्रामीण समाज की जनता में जागरूकता लाने, चुनावों को प्रभावित करने, राजनीतिक सहभागिता बढ़ाने, जनता को आत्मइच्छा से सर्वश्रेष्ठ प्रत्याशी चुनने तथा सरकार की नीति–निर्णयों का विरोध या समर्थन कराने में क्या भूमिका निभा रहें हैं। शोध उद्देश्यों को निश्चित दिशा देने के लिए कुछ परिकल्पनाओं का निमार्ण किया गया है जो निम्न हैं–

1. जनसंचार माध्यम राजनीतिक सहभागिता बढाने में सहायक होते है।
2. जनसंचार माध्यम ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक समाजीकरण का माध्यम होते है।
3. जनसंचार माध्यम जनता व सरकार के मध्य सेतु का कार्य करते है।
4. जनसंचार माध्यम जनता को निष्पक्षता से सूचना प्रदान कराते है।
5. जनसंचार माध्यम मतदान प्रक्रिया एवं चुनाव परिणामों को प्रभावित करते हैं।
6. जनसंचार माध्यम चुनाव प्रचार का प्रमुख साधन बन गए हैं।

अध्ययन हेतु समर्पित परिकल्पनाओं की पुष्टि के लिए हमने आनुभाविक पद्धति की सर्वेक्षण विधि को अपनाया है। चूँकि हमारा यह शोध ग्रामीण समाजों से सम्बन्धित है अतः हमने प्रतिदर्श पद्धति के आधार पर गाजियाबाद जिले की तीनों तहसीलों से एक–एक गाँव का चयन किया। तीनों चयनित गाँवों से 300 उत्तरदाता दैव–निदर्शन प्रणाली से चयनित किये हैं। चयनित उत्तरदाताओं से अनुसूची का प्रयोग करके प्राथमिक आँकड़े एकत्र किये गये हैं। अनुसूची के लिये हमने अपने शोध विषय से सम्बन्धित बन्द विकल्पों वाले 34 प्रश्नों का निर्माण किया और चयनित उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछकर आंकड़ों को एकत्रित किया और एकत्रित आंकड़ों का सारणीकरण, विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला।

शोध के अध्ययन से यह उभरकर सामने आया है कि व्यक्ति के जीवन क प्रत्येक पहलू जनसंचार माध्यमों से प्रभावित होने लगा है, यही कारण है कि आज के युग में जनसंचार माध्यम एक सार्वभौमिक आवश्यकता बन गए हैं। वर्तमान में जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र इन माध्यमों के प्रभाव से अछूता हो। ऐसी स्थिति में प्रस्तुत शोध कुछ चयनित परिकल्पनाओं के माध्यम से यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि राजव्यवस्था का संगठन, नेतृत्व, मूल्य निरूपण, सामाजिक समग्रता, विश्वास एवं औचित्य, सामाजिक चेतना एवं सहभागिता में जनसंचार माध्यमों की सृजनात्मक भूमिका की अनदेखी नहीं की जा सकती है।

शोध से स्पष्ट होता है कि जनसंचार माध्यम राजनीति को तथा राजनीति जनसंचार माध्यमों को पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। आधुनिक जनसंचार माध्यमों ने गाँवों में पहुँचकर ग्रामीण भारत का आधुनिकीकरण करने तथा सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनसंचार माध्यमों ने लोगों का राजनीतिक समाजीकरण करने, उन्हें उनकी राजनीतिक संस्कृति से अवगत कराने व राजनीतिक सहभागिता बढ़ानें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। मगर जनसंचार माध्यमों के इतने व्यापक प्रसार के बावजूद अभी भी ग्रामीण क्षेत्र में जनसंचार के प्रसार में सुधार की आवश्यकता है।